International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.6 July – August 2023

बौद्ध धर्म के शैक्षिक विचारों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन

पीयूष कुमार शुक्ल[1], डॉ. देवेन्द्र कुमार[2]
[1] शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, लार्ड्स विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)
[2]शोध निर्देषक, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, लार्ड्स विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)
Corresponding Author - पीयूष कुमार शुक्ल
DOI - 10.5281/zenodo.8278579

सारांशः

दुनिया को अपने विचारों से नया मार्ग (मध्यम मार्ग) दिखाने वाले महात्मा बुद्ध भारत के एक महान दार्शनिक, समाज सुधारक और बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। बुद्ध का सिद्धांत व्यक्ति को व्यक्ति बनने पर बल देता है। भारत में शिक्षा का इतिहास और इसका उद्देश्य बहुत ही रोचक है। शिक्षा का उद्देश्य समाज के आदर्शों को समझना है। किसी भी समाज में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य उन प्रचलित विशेषताओं और आदर्शों की आवश्यकता होती है, जो बदले में शिक्षा की प्रक्रिया को आकार देते हैं। प्राचीन भारत का बौद्ध धर्म न केवल भारत के लिए अपितु विश्व के लिए सबसे महत्वपूर्ण योगदान शिक्षा के क्षेत्र में है। भारत में बौद्ध धर्म के समय में समाज में जातिगत भेदभाव था। यह भेदभाव मनुष्य के पेशे के अनुसार और जन्म के अनुसार था। बौद्ध धर्म की शिक्षा का उद्देश्य नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पूर्णता के माध्यम से व्यक्तित्व को मानवता के उच्चतम रूप में बदलना है।वर्तमान संदर्भ में बौद्ध धर्म की शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना है। इस शोध कार्य में ऐतिहासिक और वर्णनात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों से डेटा एकत्रित किया गया है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यदि हम बुद्ध के विचारों को वर्तमान परिपेक्ष्य में स्वीकार करें तो हमारे जीवन और समाज की अनेक समस्याओं का एक समुचित हल निकाला जा सकता है। साथ ही मानव सभ्यता सकारात्मक सुधारों के साथ एक सही दिशा में अग्रसर हो सकेगी।

प्रमुख शब्दः शिक्षा, प्रासंगिकता, गौतम बुद्ध, शैक्षिक विचार, वर्तमान, बौद्ध धर्म।

प्रस्तावनाः

गौतम बुद्ध के जन्म तक भारतीय व्यवस्था काफी दोषपूर्ण हो चुकी थी। धर्म ने ऐसी परम्पराओं को जन्म देकर उनकी परवरिश कर दी थी, जो लोगों के लिए बहुत हानिकारक थीं। आस्था के

नाम पर लोगों को गुमराह किया जाने लगा था। दुःखों से मुक्ति के नाम पर कर्मकाण्डों का बोलबाला हो चुका था। कर्मकाण्डों के नाम पर यज्ञ अधिक होने लगे थे, बलि देने की परम्परा ने जीवों की हत्या करनी शुरू कर दी थी और सामाजिक असमानता आदि जैसे समाज में कई दोष आ गये थे।

भारत में कुरीतियां बहुत बढ़ चुकी थी, तो उस समय गौतम बुद्ध का जन्म हुआ। गौतम बुद्ध की शिक्षाओं ने संसार को सत्य और अहिंसा का संदेश दिया। गौतम बुद्ध की शिक्षाओं का अनुसरण करके लोगों ने अपने कल्याण के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों को भी सत्य और अहिंसा का कल्याणकारी रास्ता बताया। गौतम बुद्ध ने लोगों के कल्याणकारी उपदेश, लोगों की भाषा में दिये और उनके शिष्यों ने भी उनके कल्याणकारी उपदेशों एवं शिक्षाओं को दूर-दूर तक पहुँचाया। बुद्ध के उपदेशों के आधार पर तीन पिटकों की रचना हुई, जिनको सम्मिलित रूप से त्रिपिटक कहा गया। जिनमें विनय पिटक, सुत पिटक और अभिधम्म पिटक थे। विनय पिटक में गौतम बुद्ध द्वारा बताये भिक्षु संघ के नियमों का संग्रह, सुत पिटक में गौतम बुद्ध के उपदेशों का संग्रह एवं अभिधम्मपिटक में दार्शनिक विषयों का विवेचन है। बुद्ध काल में सभ्यता में उल्लेखनीय प्रगति हुई। नगर केवल राज सत्ता और व्यापार के ही केन्द्र नहीं रहे, बल्कि शिक्षा के केन्द्र भी बने जैसे - तक्षशिक्षा एवं नालन्दा आदि। बुद्ध काल की शिक्षाओं का महत्व वर्तमान में भी है। बुद्ध की शिक्षायें सर्वव्यापी हैं। जहाँ-जहाँ गौतम बुद्ध की शिक्षाओं का अनुसरण किया गया, वहाँ-वहाँ अत्यधिक विकास हुआ।

अध्ययन का उद्देश्य:

1. प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान संदर्भ में बौद्ध धर्म की शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना है।

अनुसंधान विधि:

अनुसंधान की विभिन्न विधियों का वर्गीकरण अनेक प्रकार से किया जाता है। सामान्यतः अनुसंधान विधियाँ ऐतिहासिक विधि, वर्णनात्मक विधि तथा प्रयोगात्मक विधि आदि नामों से जानी जाती हैं। समस्या की प्रकृति के आधार पर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य “बौद्ध धर्म के शैक्षिक विचारों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन” एक शिक्षा दर्शन का विषय है । अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में दार्शनिक विधि एवं साहित्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है । प्रस्तुत शोध में प्राथमिक स्रोत के रुप में अनुसंधान सामग्री के मूल स्रोत आते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन में बौद्धकालीन शिक्षा के त्रिपिटिक, मिलिन्द पन्हो, अश्वघोष की बुद्ध चरित आदि की सहायता ली गई है एवं द्वितीय स्रोत की सामग्री अनुसन्धानकर्ता दूसरों के प्रयोग

अथवा अनुसंधान से प्राप्त की गई है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध कार्य प्राथमिक एवं द्वितीय दोनों स्रोतों पर आधारित है।

बौद्धकालीन शिक्षा:

बौद्ध शिक्षा प्रणाली कुछ बुनियादी सिद्धांतों के आधार पर विकसित हुई। इस शिक्षा ने नैतिक, मानसिक और शारीरिक विकास पर जोर दिया और छात्रों को संघ के नियमों की ओर मोड़ने और उनका पालन करने के लिए मार्गदर्शन किया। संपूर्ण त्रिपिटक में बुद्ध की शिक्षाएं, संदेश, दर्शन और भिक्षुओं और भिक्षुओं के लिए नियम शामिल हैं। पाठ्यक्रम मुख्यतः आध्यात्मिक प्रकृति का था। ऐसा इसलिए था क्योंकि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना था। इसलिए धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन सबसे महत्वपूर्ण था। इस प्रकार का पाठ्यक्रम केवल भिक्षुओं के लिए था। इनके अलावा कताई, बुनाई, कपड़ों की छपाई, सिलाई, रेखाचित्र बनाना, हिसाब-किताब, दवाइयां, शल्य चिकित्सा और सिक्का बनाना बौद्ध शिक्षा के अन्य विषय थे। प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा थी, बाद में इसमें पाली और प्राकृत को शामिल किया गया। बाद के काल में समाज की मांग के अनुसार और व्यावसायिक शिक्षा, कला, मूर्तिकला, वास्तुकला, चिकित्सा को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया। बौद्ध शिक्षा धार्मिक क्षेत्र से निकलकर मानव जाति के हित के लिए निकली। प्राथमिक और उच्च शिक्षा दो प्रकार की होती थी। प्राथमिक शिक्षा में पढ़ना, लिखना और अंकगणित पढ़ाया जाता था और उच्च शिक्षा में धर्म दर्शन आयुर्वेद, सैन्य प्रशिक्षण को शामिल किया गया था। प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी प्रतिबंध के अपना विषय चुनने के लिए स्वतंत्र था। शिक्षा की बौद्ध प्रणाली के दौरान व्यावसायिक शिक्षा की उपेक्षा नहीं की गई थी। विहार के भिक्षुओं को कताई, बुनाई और सिलाई सिखाई जाती थी ताकि वे अपने कपड़ों की आवश्यकता को पूरा कर सकें। उन्हें वास्तुकला की शिक्षा भी दी जाती थी। वास्तुकला की शिक्षा ने उन्हें नए विहार बनाने या पुराने की मरम्मत करने में सक्षम बनाया। इसी प्रकार विहार के बाहर रहने वाले बौद्ध धर्म का पालन करने वाले गृहस्थों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण दिए जाते थे और वे अपनी आजीविका भी कमाते थे। उल्लेखनीय है कि बौद्ध शैक्षिक पाठ्यक्रम में वैदिक विषय भी शामिल थे। इस तरह बौद्ध और वैदिक शिक्षा के अंतर को मिटा दिया गया और एकजुट किया गया। भारत में शिक्षा के इतिहास में यह एक ऐतिहासिक घटना थी।

बुद्ध के शिक्षण का मूल:

बुद्ध की शिक्षाओं में अनुशासन, ध्यान और प्रज्ञा के तीन प्रमुख बिंदु हैं। ज्ञान प्राप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण

प्रक्रिया में ज्ञान लक्ष्य और गहन ध्यान या एकाग्रता है। उपदेशों के पालन के माध्यम से अनुशासन, वह तरीका है जो व्यक्ति को गहन ध्यान प्राप्त करने में मदद करता है; ज्ञान तब स्वाभाविक रूप से महसूस किया जाएगा। बुद्ध की संपूर्ण शिक्षा, जैसा कि सूत्रों में बताया गया है, वास्तव में कभी भी इन तीन बिंदुओं से विचलित नहीं होती है। बौद्ध धर्म में बुद्ध शाक्यमुनि के कार्यों का संपूर्ण संग्रह शामिल है और इसे त्रिपिटक कहा जाता है। इसे तीन श्रेणियों सूत्र, विनय (उपदेश या नियम) शास्त्र (टिप्पणी) में वर्गीकृत किया जा सकता है जो क्रमशः ध्यान, अनुशासन और ज्ञान पर जोर देते हैं।

बुद्ध की शिक्षाओं का लक्ष्य:

बौद्ध शिक्षा का लक्ष्य ज्ञान प्राप्त करना है। संस्कृत में, प्राचीन भारत की भाषा, बौद्ध ज्ञान को अनुत्तर-सम्यक-संबोधि कहा जाता था, जिसका अर्थ है पूर्ण परम ज्ञान। बुद्ध ने हमें सिखाया कि हमारे अभ्यास या साधना का मुख्य उद्देश्य इस परम ज्ञान को प्राप्त करना था। बुद्ध ने आगे हमें सिखाया कि हर किसी में परम ज्ञान की इस स्थिति को महसूस करने की क्षमता है, क्योंकि यह हमारी प्रकृति का एक आंतरिक हिस्सा है, न कि कोई बाहरी रूप से प्राप्त करता है। बौद्ध शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य हमारी आंतरिक प्रकृति को पुनः प्राप्त करना है। यह पूर्ण समानता की भी शिक्षा देता है जो बुद्ध की इस मान्यता से उपजा है कि सभी सत्वों में यह सहज ज्ञान और प्रकृति होती है। बुद्ध की शिक्षा हमें उस सहज, पूर्ण, परम ज्ञान को समझने में मदद करती है। ज्ञान के द्वारा हम अपनी सभी समस्याओं को हल कर सकते हैं और दुख को सुख में बदल सकते हैं।

बुद्ध के अनुसार शिक्षा एक ऐसी महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो मनुष्य को लौकिक एवं पारमार्थिक दोनों जीवन के योग्य बनाती है। उनके अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है, जो मनुष्य को निर्वाण की प्राप्ति कराये। लौकिक दृष्टि से मनुष्य के शारीरिक, बौद्धिक, चारित्रिक, नैतिक तथा आर्थिक विकास पर बल दिया है और पारमार्थिक दृष्टि से मनुष्य के निर्वाण की प्राप्ति के लिए चार आर्य सत्यों, पंचशील, अष्टांगिक मार्ग और त्रिरत्न की उपलब्धि पर बल दिया है। अष्टांगिक मार्ग निम्न प्रकार हैं :-

सम्यक् दृष्टिः अविद्या के कारण मनुष्य सांसारिक सुख नहीं भोग पाता। मिथ्या दृष्टि को छोड़कर वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप पर ध्यान रखने को सम्यक् दृष्टि कहते हैं। यही विकसित करना बौद्धकालीन शिक्षा का उद्देश्य है।

सम्यक् संकल्पः बौद्धकालीन शिक्षा का उद्देश्य बुरी भावनाओं और हानि पहुँचाने वाले विचारों का उन्मूलन करना। सम्यक् संकल्प में त्याग परोपकार और करूणा सम्मिलित है।

सम्यक् वाकः सम्यक् वाक में मिथ्यावाद, निन्दा एवं अप्रिय वचन आदि का निषेध है। विद्यार्थी को अशुभ से बचकर शुभ वाचन करना चाहिए।

सम्यक् कर्मान्तः विद्यार्थी को अपने गुरूओं का आदर करना चाहिए, उनके आदेश का पालन करना चाहिए एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहिए।

सम्यक् आजीविकाः बौद्धकालीन शिक्षा का उद्देश्य शुद्ध उपायों से जीविकोपार्जन करना है।

सम्यक् व्यायामः कुसंस्कारों एवं अशुद्ध विचारों को रोकने के प्रयास को सम्यक् व्यायाम कहा गया है। इससे विद्यार्थी का नैतिक व मानसिक विकास होता है।

सम्यक् स्मृतिः सम्यक् स्मृति के अनुसार, विद्यार्थी शरीर, चित्त, वेदना को उसके यथार्थ रूप में स्मरण रखते हैं।

सम्यक् समाधिः सम्यक् समाधि में विद्यार्थी के अन्तःकरण की शुद्धि होती है और ज्ञान का उदय होता है।

बौद्धकालीन शिक्षा का पाठ्यक्रमः

पाठ्यक्रम में कुछ विषय धार्मिक प्रकृति के थे, जिनका आधार आलौकिक था। कुछ विषय लौकिक आधार पर आधारित थे। धार्मिक पाठ्यक्रम भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के लिए था, इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य निर्वाण प्राप्त करना था। इस पाठ्यक्रम में चार आर्य सत्यों का पूर्ण ज्ञान था। बौद्ध विहारों में पाँच विद्याओं शब्द विद्या, शिल्पासन विद्या, चिकित्सा विद्या, हेतु विद्या एवं आध्यात्मिक विद्या। लौकिक पाठ्यक्रम साधारण लोगों के लिए था। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य स्त्री-पुरूषों को अच्छा नागरिक बनाना था। पाठ्यक्रम में सामान्य विषय, कला कौशल, व्यावहारिक विषय थे।

बौद्धकालीन शिक्षा के स्तर : शिक्षा के दो स्तर थे। प्राथमिक स्तर तथा उच्च स्तर। प्राथमिक स्तर पर लिखना पढ़ना तथा साधारण गणित का अध्ययन कराया जाता था। उच्च स्तर पर धर्म, दर्शन एवं चिकित्सा आदि का ज्ञान दिया जाता था।

बुद्धकालीन पाठ्य सहगामी क्रियायें : पाठ्यक्रम में पाठ्य सहगामी क्रियाओं को सम्मिलित किया गया था, जिनमें चौपड़, रेखा-चित्र बनाना, गेंद खेलना, तुरही बजाना, हल चलाने की नकल करना, रथों की दौड़ एवं धनुष-बाण प्रतियोगिता आदि थे।

बौद्धकालीन शिक्षा में अनुशासन : गुरू एवं शिष्य दोनों संघ के आश्रित होते थे। संघ की सत्ता सर्वापरि थी। प्रत्येक शिक्षक एवं शिक्षार्थी को संघ के नियमों का पालन करना पड़ता था। संयमी जीवन को अनुशासन माना जाता था।

बौद्धकालीन शिक्षा में शिक्षक : शिक्षक वह हो सकता था, जिसने चार आर्य सत्यों को जान लिया है और जो अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करता है, 10 वर्ष के अनुभवी भिक्षु ही शिक्षा दे

सकते थे। शिक्षक शुद्ध आचरण, पवित्र विचार, विनम्रता और मानसिक क्षमता से परिपूर्ण होता था।

बौद्धकालीन शिक्षा में शिक्षार्थी : शिक्षार्थी मठ तथा बिहारों में अपने माता-पिता की आज्ञा से शिक्षा ग्रहण करते थे। ऐसे विद्यार्थी को प्रवेश नहीं मिलता था, जो संक्रामक रोग से पीड़ित हो, घोर नैतिक अपराधी हो, अविनम्र, दुराचारी एवं पलायनकर्त्ता आदि हो। संघ में प्रवेश के समय विद्यार्थी को दस आदेश दिये जाते थे। ये दस आदेश श्दस सिक्खा पदानि कहलाते थे। प्रत्येक छात्र को इनका पालन करना होता था।

बौद्धकालीन शिक्षा में विद्यालय : बौद्धकालीन षिक्षा मठों और बिहारों में चलती थी। ये ही इस समय के विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय थे। ये विद्यालय संघ पर आश्रित थे। संघ सर्वापरि थे, 8 वर्ष की आयु में पब्बज्जा संस्कार के साथ बच्चे का मठ अथवा बिहार में प्रवेश होता था।

बौद्धकालीन शिक्षा की शिक्षण विधि : बौद्धकालीन शिक्षा में व्याख्यान शिक्षण विधि, वाद-विवाद विधि, पर्यटन विधि, सूत्र विधि एवं स्वाध्याय विधि आदि शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता था।

बौद्धकालीन शिक्षा की वर्तमान शिक्षा परिप्रेक्ष्य प्रांसगिकता:

बौद्धकालीन शिक्षा वर्तमान में भी प्रासंगिक है। बौद्धकालीन शिक्षा मानव कल्याण हेतु है। बुद्ध ने अपने व्यक्तिगत अनुभव से दुःख को पहचाना एवं इससे मुक्ति हेतु सही मार्ग बताया। बुद्ध के बताये मार्ग पर चलकर मनुष्य अपने दुःखों से मुक्ति पा सकता है। मनुष्य का मनुष्य के प्रति भेदभाव बौद्धकालीन शिक्षा के माध्यम से दूर किया जा सकता है। बुद्ध का पंचशील, मनुष्य को सत्य बोलने, झूठ न बोलने, किसी स्त्री से व्यभिचार न करने, जीव हत्या न करने तथा मादक पदार्थों से दूर रहने की प्रतिज्ञा करता है। इन प्रतिज्ञाओं का पालन करते हुए व्यक्ति अपने आप को श्रेष्ठ बना सकता है और बुद्ध के बताये अष्टांगिक मार्ग पर चलकर मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। आजकल मनुष्य नैतिक मूल्यों से गिरता जा रहा है, यदि वह बौद्धकालीन शिक्षा का अनुसरण करें, तो वह अपना, अपने परिवार का तथा समाज का कल्याण करते हुए एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकता है। बौद्ध कालीन शिक्षा सभी वर्ग के लोगों के लिए खुली थी, केवल चण्डाल को छोड़कर। बौद्ध कालीन शिक्षा में मनुष्य का विकास किया जाता था, मनुष्य को भिक्षु जीवन तथा भौतिक जीवन के लिए तैयार किया जाता था।

महात्मा बुद्ध भारतीय विरासत के एक महान विभूति हैं। उन्होंने सम्पूर्ण मानव सभ्यता को एक नयी राह दिखाई। उनके विचार, उनकी मृत्यु के लगभग 2500 वर्षों के पश्चात् आज भी हमारे

समाज के लिये प्रासंगिक बने हुए हैं।बुद्ध का सबसे महत्वपूर्ण विचार 'आत्म दीपों भवः' है अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनो। इस विचार का मूल यह है कि व्यक्ति को अपने जीवन में किसी भी नैतिक-अनैतिक प्रश्न का फैसला स्वयं करना चाहिए।

वर्तमान समय में बुद्ध के इस विचार का महत्त्व बढ़ जाता है दरअसल आज व्यक्ति अपने घर, ऑफिस, कॉलेज आदि जगहों पर अपने जीवन के महत्वपूर्ण फैसले भी स्वयं न लेकर दूसरे की सलाह पर लेता है अतः वह वस्तु बन जाता है। बुद्ध का सिद्धांत व्यक्ति को व्यक्ति बनने पर बल देता है।बुद्ध के नैतिक दृष्टिकोण का दूसरा प्रमुख विचार मध्यम मार्ग के नाम से जाना जाता है। उल्लेखनीय है कि उनका मध्यम मार्ग सिद्धांत आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना बुद्ध के समय था। उनके इन विचारों की पृष्टि इस कथन से होती है फ्वीणा के तार को उतना नहीं खींचना चाहिए कि वह टूट ही जाए या फिर उतना भी उसे ढीला नहीं छोड़ा जाना चाहिए कि उससे स्वर ध्वनि ही न निकले।उनके मध्यम मार्ग और इहलौकिता पर बल के विचारों की प्रासंगिकता वर्तमान समय में और ज्यादा बढ़ जाती है। उनका यह सिद्धांत रूढ़िवादिता को नकारते हुए तार्किकता पर बल देता है। दरअसल आज दुनिया में तमाम तरह के झगड़े हैं जैसे-सांप्रदायिकता, आतंकवाद, नक्सलवाद, नस्लवाद तथा जातिवाद इत्यादि। इन सारे झगड़ों के मूल में बुनियादी दार्शनिक समस्या यही है कि कोई भी व्यक्ति देश या संस्था अपने दृष्टिकोण से पीछे हटने को तैयार नहीं है। इस दृष्टि से इस्लामिक स्टेट जैसे अतिवादी समूह हो या मॉब लिंचिंग विचारधारा को कट्टर रूप में स्वीकार करने वाला कोई समूह हो या अन्य समूह सभी के साथ मूल समस्या नजरिये की ही है। महात्मा बुद्ध के मध्यम मार्ग सिद्धांत को स्वीकार करते ही हमारा नैतिक दृष्टिकोण बेहतर हो जाता है। हम यह मानने लगते हैं कि कोई भी चीज का अति होना घातक होता है। यह विचार हमें विभिन्न दृष्टिकोणों के मेल-मिलाप तथा आम सहमति प्राप्त करने की ओर ले जाता है।

अगर आज दो विरोधी समूहों के बीच सार्थक संवाद हो तो धार्मिक सहिष्णुता और सर्व धर्म संभाव सिर्फ कहने भर की बातें नहीं रहेंगी बल्कि दुनिया का सच बन जाएंगी।महात्मा बुद्ध का यह विचार की दुःखों का मूल कारण इच्छाएँ हैं, आज के उपभोक्तावादी समाज के लिए प्रासंगिक प्रतीत होता है। दरअसल प्रत्येक इच्छाओं की संतुष्टि के लिए प्राकृतिक या सामाजिक संसधानों की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे में अगर सभी व्यक्तियों के भीतर इच्छाओं की प्रबलता बढ़ जाए तो प्राकृतिक संसाधन

नष्ट होने लगेंगे, साथ ही सामजिक संबंधों में तनाव उत्पन्न हो जाएगा। ऐसे में अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करना समाज और नैतिकता के लिए अनिवार्य हो जाता है। इस बात की पुष्टि हाल ही में 'अर्थ आँवर शूट डे' के रिपोर्ट से होती है जिससे यह पता चलता है कि जो संसाधन साल भर चलना चाहिए था वह आठ महिने में खत्म हो गया।बुद्ध के विचारों का आज के संदर्भ में प्रेरणादायी पक्ष यह भी है कि वे सदगुणों के विकास पर अत्यधिक बल देते थे। उन्होने अपने अनुयायियों को जो आचरण संहिता बताया उसमे कष्टों को सहने की ताकत और अनुशासित जीवन को अत्यधिक महत्त्व दिया गया। उदाहरण के लिए उन्होंने अंहकार को बहुत बड़ा अवगुण माना और सलाह दिया कि जिन लोगों के अंदर 'मैं' की भावना बहुत अधिक होती है वे अकसर बाकी लोगों को अपने साथ लेकर नहीं चल पाते। उन्हें प्रायः हर व्यक्ति में अपना प्रतिस्पर्द्धी और शत्रु ही नजर आता है, दोस्त या शुभचिंतक नहीं। उदाहरण के लिए आज 'अंह' की भावना के चलते व्यक्तिगत संबंध खराब हो रहे हैं। परिवार में बिखराव आ रहा है आपसी संर्घष बढ़ रहे हैं। ऐसे में यह सिद्धांत दूसरे को समझने में सहायक हो सकता है।

महात्मा बुद्ध ईश्वर (जो धर्म का केन्द्रीय बिन्दु है) को नकारते हुए भी बौद्ध धर्म को इतने व्यापक स्तर पर स्थापित करने में सफल रहे हैं जो उनकी प्रासंगिकता को बताता है।बुद्ध का कर्मवादी सिद्धांत भी वर्तमान विश्व में काफी महत्त्व रखता है। दरअसल आज जिस तरह व्यक्ति भाग्यवाद तथा तरह-तरह के आडंबरों एवं कर्मकाण्ड में जकड़ता जा रहा है, ऐसे में कर्मवादी सिद्धांत उन्हे मानव कल्याण से जोड़कर समाज को तार्किक बनाने में कारगर साबित हो सकता है।

महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं की उपयोगिता आज के परिप्रेक्ष्य में बढ़ जाती हैं उनकी शिक्षा नैतिकता, करूणा और संवेदनशीलता को बढ़ाने में सहायक हो सकती है, जिसके माध्यम से शांति और सतत विकास पर आधारित एक संघर्ष मुक्त विश्व व्यवस्था को सुनिश्चित किया जा सकता है। दरअसल आज स्कूल, कॉलेज में शिक्षा का उद्देश्य अच्छी व्यवस्था व भौतिकवादी समाज में अधिक से अधिक संसाधनों पर कब्जा प्राप्त करना रह गया है। ऐसे में व्यक्ति मानवतावादी सिद्धांतों से दूर हो गया है, जहाँ संवेदनाका स्तर शून्य हो गया है। बच्चों पर उच्च अंक लाने का दबाव डाला जा रहा है न की इस बात का कि वे शिक्षा प्राप्त कर नैतिक व्यक्ति बने।आज घृणा के विचारधाराओं के समर्थकों को विचारहीन मृत्यु और विनाश से बचने के लिए रचनात्मक रूप से संलग्न होने की आवश्यकता है। ऐसे में बुद्ध का सिद्धांत शांति से बढ़कर

कोई आनंद नही है, ज्यादा प्रसांगिक हो जाता है।जिस सिद्धांत के लिए महात्मा बुद्ध के विचारों की प्रासंगिकता विश्व में बढ़ जाती है वह हैं- अहिंसा। अहिंसा के विचारों की बात महत्मा बुद्ध के समकालीन महावीर द्वारा भी कही गई थी। उल्लेखनीय है कि महात्मा बुद्ध का अंहिसा का विचार सभी प्राणीमात्र के लिए था। आज विश्व में जहाँ एक तरफ पशुओं के विरूद्ध हिंसा के नए-नए तरीके खोजे जा रहे हैं वहीं पशुओं के साथ अच्छा आचारण करने को लेकर पेटा जैसी संस्थाएँ विश्वव्यापी आंदोलन चला रही हैं।

बुद्ध का अष्टांगिक मार्ग का सिद्धांत आज के भौतिकवादी समाज में ज्यादा प्रासंगिक हो जाता है। उदाहरण के लिए उनका सम्य्क जीविका का विचार इस बात पर बल देता है कि समाज मे सभी को जीविका मिले जिससे आज के समाज की जैसे बड़ी समस्या बेरोजगारी का समाधान हो सकता है।बुद्ध का मानव के कल्याण के लिए अंतःशुद्धि का सिद्धांत भी काफी महत्वपूर्ण हो जाता है। यह सिद्धांत व्यक्ति को अन्दर से नैतिक होने पर बल देता है। आज जिस तरह व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं से अधिक संपदा एकत्र करने के लिए संघर्षशील है वह कहीं न कहीं एक बड़े वर्ग को प्रभावित कर रही है। हाल ही में रिपोर्ट में पाया गया है कि कुल संसाधनों का एक बड़ा भाग कुछ व्यक्तियों के हाथ में केन्द्रित हो कर रह गया है। ऐसे में अगर उनका यह विचार सही तरीके से स्थापित हो जाए तो कोई भी उद्यमी अपने कर्मचारियों का हक नहीं मारेगा- कोई अमीर किसी गरीब को नुकसान नहीं पहुँचाएँगा और अर्थव्यवस्था में तनाव की जगह सद्भाव को प्राथमिक स्थान मिलेगा।बुद्ध की नीति की एक अन्य प्रेरणादायी बात यह है कि इसमें परिवर्तनों के प्रति बेहद सकारात्मक रूख दिखाई पड़ता है। बुद्ध का प्रसिद्ध कथन है कि हम एक नदी में दो बार नहीं नहा सकते क्योंकि दूसरी बार नहाने के समय न तो वह जल रहेगा और न ही वह नहाने वाला क्योंकि तब तक जल की धारा काफी आगे बढ़ चुकी होगी और नहाने वाले के शरीर में सूक्ष्म स्तर पर असंख्य परिवर्तन आ चुके होंगे। बुद्ध का यह विचार हमें रूढ़िवादी होने से बचाती है। आज समय के अधिकांश संकटों का जड़ इसी बात में छिपा है कि लोग समय के अनुसार खुद को बदल नहीं पाते। अगर हम बुद्ध की इस बात को समझ लें कि परिवर्तन ही सत्य है तो शायद यह यथास्थितिवादी होने से बच सकें। इस विचार से जातिवाद, संप्रदायवाद, नस्लवाद आदि की समाप्ति हो जाएगी।

निष्कर्ष:

बौद्ध धर्म के शैक्षिक विचारों में समाज को सशक्त बनाने के लिए विशेषतः सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, त्याग,

परोपकार, सहानुभूति, संयम एवं सेवा भावना आदि का मनुष्य में विद्यमान होना अति आवश्यक है। गौतम बौद्ध के शैक्षिक विचारों में, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के लोक कल्याणकारी आदर्श विद्यमान हैं।गौतम बुद्ध की शिक्षाओं में मनुष्य के कल्याण हेतु लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के विषयों एवं क्रियाओं को स्थान दिया गया है। शिक्षा द्वारा मनुष्य को किसी कला-कौशल, उद्योग अथवा व्यवसाय में प्रशिक्षित करने की शुरूआत तो हमारे देश में बुद्ध काल में ही हो गई थी, परन्तु इसे व्यवस्थित रूप बौद्ध शिक्षा ने दिया। निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि भारत में शैक्षिक प्रशासन, शैक्षिक संगठन, विद्यालय, विश्वविद्यालय एवं समूह शिक्षण का प्रारम्भ बौद्ध कालीन षिक्षा में हुआ। बौद्ध कालीन शिक्षा ने वर्तमान शिक्षा की नींव रखी। इसी के साथ-साथ बौद्ध शिक्षा ने जन शिक्षा, स्त्री शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा की भी नींव रखी।बौद्ध शिक्षा जन्म के आधार पर मनुष्य-मनुष्य में भेद नहीं करती है। उन्होंने सभी के लिए प्रारम्भिक शिक्षा का प्रावधान किया था। उन्होंने जन शिक्षा का समर्थन किया। यह कहा जा सकता है कि बौद्ध शिक्षा आज के संदर्भ में बहुत प्रासंगिक है। बौद्ध शिक्षा से समाज में समरसता एवं लोगों के बीच मधुर सम्बन्ध कायम किये जा सकते हैं। उपर्युक्त सीमाओं के बावजूद निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यदि हम बुद्ध के विचारों को वर्तमान परिपेक्ष्य में स्वीकार करें तो हमारे जीवन और समाज की अनेक समस्याओं का एक समुचित हल निकाला जा सकता है। साथ ही मानव सभ्यता सकारात्मक सुधारों के साथ एक सही दिशा में अग्रसर हो सकेगी।

संदर्भ ग्रथ सूची:

1. कुमार, वीरेन्द्र, ‘‘बौद्धकालीन शिक्षा की वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता’’, इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ़ मैनेजमेंट सोशियोलॉजी एंड ह्यूमैनिटी, (7)10, 2019, पृष्ठः ।10-1
2. मेशराम, एम., ‘‘रोल ऑफ बुद्धिस्ट एजुकेशन इन अन्सिएंट इंडिया’’, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन हुमनीटीएस, आर्ट्स एंड लिटरेचर, (3)1, 2013, पृष्ठः ।16-7
3. बाला, रजनी व गिल, अलीशा, ‘‘रेलेवंस ऑफ बुद्धिस्ट एजुकेशन सिस्टम इन इंडिया’’, स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर ह्यूमैनिटी साइंस एंड इंग्लिश लैंग्वेज, (34)7, 2019, पृष्ठः ।22-1
4. रानी, लक्ष्मी व कुमारी, पुष्पा, ‘‘रोल ऑफ बुद्धिस्ट रिलिजन इन डेवलपमेंट ऑफ़ इंडियन एजुकेशन सिस्टम’’, इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च इन एजुकेशन, आर्ट्स एंड लिटरेचर, (5)8, 2019, पृष्ठः ।8-1
5. मसीह, एविद्यापति व ., ‘‘रोल ऑफ़ बुद्धिज़्म इन द डेवलपमेंट ऑफ़ इंडियन एजुकेशन’’, इंटरनेशनल जर्नल फॉर

रिसर्च इन एजुकेशन, (1)8, 2018, पृष्ठः ।31-28

6. सिंगरिया, एम.आर., ''डॉ .र .बी . एं आंबेडकरड वीमेन एम्पावरमेंट इन इंडिया'', जर्नल ऑफ रिसर्च इन हमनीटीएस एंड सोशल साइंस, (1)2, 2014, पृष्ठः ।4-1
7. पाण्डेय, शैलेश कुमार, ''वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में बौद्ध दर्शन की शिक्षा की आवश्यकताः एक अध्ययन'', जर्नल ऑफ़ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च, (9)5, 2018, पृष्ठः -1 ।10
8. फ्रा, क्रु अरुणसुतलंगकर्ण, ''बुद्धिज़्म एंड एजुकेशन इन थाई सोसाइटी'', जर्नल ऑफ बुद्धिस्ट एजुकेशन एंड रिसर्च, (1)2, 2016, पृष्ठः ।16-8
9. लेदिन्ह ., सोन, ''सिग्नीफिकेन्स ऑफ बुद्धिस्ट एजुकेशन एंड इट्स रोल इंमोडर्न सोसाइटी'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च, (10)10, 2021, पृष्ठः ।3-1
10. शर्मा, कमल कान्त, ''वर्तमान समय में बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, (7)3, 2017, पृष्ठः ।4-1
11. कुमारी, करूणा, ''वर्तमान शिक्षा में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन'', जर्नल ऑफ़ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रेसर्चेस इन अलाइड एजुकेशन, (22)11, 2016, पृष्ठः -74 ।76